Toppersnotes®
Unleash the topper in you

कृषि – पर्यवेक्षक

Agriculture Supervisor

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड, जयपुर

भाग – 1

राजस्थान का इतिहास एवं कला–संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

राजस्थान – कृषि पर्यवेक्षक

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	प्राचीन राजस्थान का इतिहास	1
	• परिचय	1
	• प्राचीन सभ्याताएँ	4
	• महाजनपद काल	8
	• मौर्यकाल	9
	• मौर्योत्तर काल	9
	• गुप्तकाल	9
	• गुप्तोत्तर काल	10
2.	मध्यकाल राजस्थान का इतिहास	11
	• प्रमुख राजवंश एवं उनकी विशेषताएँ	
	• राजस्थान की रियासतें और अंग्रेजों के साथ संधियाँ	
3.	आधुनिक राजस्थान का इतिहास	53
	• 1857 की क्रांति	53
	• प्रमुख किसान आन्दोलन	55
	• प्रमुख जनजातीय आन्दोलन	59
	• प्रमुख प्रजामण्डल आन्दोलन	60
	• राजस्थान का एकीकरण	64
4.	राजस्थान कला एवं संस्कृति	69
	• राजस्थान के त्यौहार	69
	• राजस्थान के लोक देवता	75
	• राजस्थान की लोक देवियाँ	80
	• राजस्थान के लोक सन्त एवं सम्प्रदाय	84
	• राजस्थान के लोकगीत	90

	• राजस्थान की लोकगायन की शैलियाँ	91
	• राजस्थान के संगीत	92
	• राजस्थान के लोक नृत्य	93
	• राजस्थान के लोकनाट्य	97
	• राजस्थान की जनजातियाँ	100
	• राजस्थान की चित्रकला	103
	• राजस्थान की लोक कला	109
	• राजस्थान की हस्तकलाएँ	111
	• राजस्थान का साहित्य	117
	• राजस्थान की प्रमुख बोलियाँ	124
	• राजस्थान के प्रमुख लोक वाद्य यंत्र	126
5.	राजस्थान की स्थापत्य कला	131
	• किले एवं स्मारक	131
	• राजस्थान के धार्मिक स्थल	140
	• राजस्थान की सामाजिक प्रथाएँ एवं रीति–रिवाज	145
	• राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व	147
	• वेश–भूषा व आभूषण	151

राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति

राजस्थान का इतिहास एक परिचय

- 1949 ई. से पूर्व राजस्थान राज्य अस्तित्व मे नही था ।
- 1800 ई. में सर्वप्रथम जॉर्ज थॉमस ने इस भू भाग के लिए "राजपुताना" शब्द का प्रयोग किया था;
- 1829 ई. में "एनल्स एण्ड एण्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान" के लेखक कर्नल जेम्स टॉड ने इस पुस्तक में इस प्रदेश का नाम "रायथान" अथवा "राजस्थान" रखा ।
- 30 मार्च 1949 ई. को स्वतन्त्रता पश्चात प्रदेश की विभिन्न रियासतों का एकीकरण हुआ और इस प्रदेश का नाम राजस्थान सर्वसम्मिति से स्वीकार किया गया ।

प्राचीन काल से ही राजस्थान विभिन्न क्षेत्रों के भिन्न भिन्न नाम मिलते है, जिन्हें हम दो प्रकार से बांट सकते है ।

(1) प्राचीन काल एवं अभिलेखो के अनुसार नाम

प्राचीन नाम	–	वर्तमान नाम
मरू, धन्व	–	जोधपुर संभाग (मरूस्थल)
जांगल	–	बीकानेर – जोधपुर
मत्स्य	–	जयपुर,अलवर,भरतपुर
शूरसेन	–	धौलपुर-करौली
अक्षत्रिपुर	–	नागौर

नोट

मरू, धन्व, जांगल, मत्स्य, शूरसेन का उल्लेख ऋग्वेद मे भी मिलता है ।

- शूरसेन, मत्स्य का उल्लेख महाभारत मे भी मिलता है ।

(2) भौगोलिक विशेषताओं के आधार पर नाम

कांठल	–	प्रतापगढ का क्षेत्र माही नदी के आस-पास
छप्पन का मैदान	–	बांसवाडा-प्रतापगढ के मध्य का भू भाग
ऊपरमाल	–	भैंसरोढगढ से लेकर बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र
गिरवा	–	उदयपुर के आस पास का पहाडी क्षेत्र
मॉड	–	जैसलमेर
बांगड	–	डूंगरपुर बांसवाडा
हाडौती	–	कोटा-बूँदी
शेखावाटी	–	सीकर झुन्झुनू, चुरू
मेवल	–	डूँगरपुर व बाँसवाडा के मध्य क्षेत्र को

प्राचीन राजस्थान का इतिहास

इतिहास का विभाजन

सम्पूर्ण इतिहास को तीन भागों (कालों) में विभक्त किया गया है ।

काल खण्ड		
प्रागैतिहासिक काल	आद्य ऐतिहासिक काल	ऐतिहासिक काल
इतिहास जानने हेतु लिखित साक्ष्य उपलब्ध नही अर्थात मानव लेखन शैली से परिचित नही।	इस काल का मानव लेखन शैली से परिचित परन्तु उस लिपि को अभी तक पढा नही जा सकता है ।	इस काल का मानव लेखन शैली से परिचित था । इस काल के स्पष्ट एवं सुपठित लिखित साक्ष्य उपलब्ध है ।
इतिहास जानने का स्त्रोत पुरातात्विक साक्ष्य एवं उपकरण अथवा सामग्री है।	इन अर्थो मे भारतीय इतिहास को इस प्रकार से विभक्त कर सकते है ।	
मानव आदिम था, मायावरी जीवन जीता था आखेट पर जीवन निर्वाह करता था आग जलाना सीख चुका था ।	1. प्राक युग – सृष्टि के आरम्भ से हडप्पा सभ्यता के पूर्व तक था । 2. आद्य युग– हडप्पा सभ्यता – 600 ईसा पूर्व 3. ऐतिहासिक–600 ईसा पूर्व – वर्तमान तक	

शिलालेख

- शिलालेख के अध्ययन को 'एपीग्राफी' कहते है ।
- भारतीय लिपियों पर पहला वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. गौरीशंकर हीरानन्द ओझा ने किया ।

घोसुण्डी शिलालेख

- यह शिलालेख नगरी (चित्तौड) के समीप घोसुण्डी ग्राम से द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व प्राप्त हुआ ।
- इस शिलालेख में भागवत धर्म का प्रसार, अश्वमेघ यज्ञ का प्रचलन आदि से है । अतः यह शिलालेख भागवत धर्म की जानकारी देने वाला राजस्थान का प्राचीन प्रमाण है ।

गंगधार शिलालेख

- यह शिलालेख झालावाडा के गंगाधर नामक स्थान से प्राप्त हुआ है जिसकी भाषा संस्कृत है ।

सांमोली शिलालेख

उदयपुर जिल के सांमोली ग्राम से प्राप्त शिलालेख गुहिल वंश के शासक शिलादित्य के समय का है ।

अपराजिता शिलालेख

वि.सं. 718 का यह शिलालेख नागदा के समीपस्थ कुण्डेश्वर मंदिर की दीवार पर लगा हुआ है ।
इस लेख की भाषा संस्कृत है ।

चित्तौड का मानमोरी शिलालेख

713 ई. का यह शिलालेख चित्तौड के पास मानसरोवर झील के तट पर कर्नल जेम्स टॉड को प्राप्त हुआ ।

औसियाँ का शिलालेख

956 ई. में पदाजा द्वारा उत्कीर्ण किया हुआ संस्कृत भाषा में पद्य रूप में है ।

किराडू का शिलालेख

यह शिलालेख एक प्रकार से राजा के आदेश/आज्ञा की जानकारी देता है । यह शिलालेख किराडू (बाडमेर) के निकट शिवमन्दिर में उत्कीर्ण है ।

प्रागैतिहासिक राजस्थान अथवा प्राक युग में राजस्थान

- मानव सभ्यता के उद्भव के काल को पाषाण काल कहते है जो इस प्रकार विभक्त है ।
  (1) पूर्व पाषाण काल
  (2) मध्य पाषाण काल
  (3) उत्तर/नव पाषाण काल
- चूंकि राजस्थान प्राचीनतम भू भागों में से एक होने के कारण मानव सभ्यता का जन्म स्थल रहा है ।
- राजस्थान मे मानव सभ्यता के प्राचीनाम् साक्ष्य नदी घाटियो में देखने को मिलते है ।

नोटः- राजस्थान में पुरातात्विक सर्वेक्षण का सर्वप्रथम श्रेय एच.सी.एल. क्लाइल को दिया जाता है ।

राजस्थान मे पूर्व पाषाणकालीन प्रमुख स्थल

निम्न है -

- अजमेर, अलवर, चित्तौड., भीलवाडा, जयपुर, झालावाड, जालौर, जोधपुर, पाली, टोंक आदि ।
- नदीः- चम्बल, बनास, लूणी एवं उनकी सहायक नदियों के किनारे पूर्व पाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए ।
  मध्य पाषाण कालः- इस काल के साक्ष्य निम्न स्थानो से प्राप्त हुए है ।
- प्रमुख स्थलः- बागौर-भीलवाडा बेडच (चित्तौड), तिलवाडा-बाडमेर, विराट-जयपुर (विराट नगर)
- नदीः- लूनी एवं सहायक नदी
- उपकरणः-ब्लेड, स्क्रेपर, ट्रायएंगल, क्रेसेन्ट, ट्रेपेज, स्क्रेपर, प्लाइटर आदि ।
- ये उपकरण-जैस्पर, एगेट, चर्ट, कार्नेलिपन, कक्वार्टजाइट, कल्सेडोनी आदी पाषाणों के बने होते थे ।

नोट

निम्न स्थानो से शैलाश्रय चित्र मिले हैः-

- बूंदी- छाजा नदी क्षेत्र, विराटनगर-जयपुर
- कोटा- अरनिया क्षेत्र, हरसौरा-अलवर
- सोहनपुरा-सीकर, दर - भरतपुर

उत्तर (नव) पाषाण कालः- भारत के अन्य भागों की तरह राजस्थान में भी इस काल के साक्ष्य मिलते है ।

स्थलः- अजमेर, नागौर, सीकर, झुन्झुनू, जयपुर हनुमानगढ (कालीबंगा), उदयपुर (आहड गिलूक), चित्तौड, जोधपुर आदि ।

राजस्थान में धातु कालः- इस काल को तीन भागों मे विभक्त किया जा सकता है ।

ताम्र पाषाण	लौह काल	चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति (PGW)
तम एवं ताम्र-कांस्य काल (केवल ताम्र पाषाण या कास्य उपकरण मिले) स्थल-गणेश्वर (सीकर) कालीबंगा (हनुमानगढ) गिलुण्ड (राजसमन्द) आहड व झाडौल (उदयपुर) पिण्ड पाडलियाँ (चित्तौड) कुराडा (नागौर)। सावनियाँ व पुगल (बीकानेर) नन्दलालपुरा, किराउत, चीथवाडी (जयपुर) कौल माहौली (सवाई माधोपुर) बुढापुष्कर (अजमेर) मलाह (भरतपुर)	लौंहे का आविष्कार स्थलः- नोह (भरतपुर) जोधपुर (जयपुर) नगर सुनारी (झुझुनू) भीनमाल रैढ (टोंक) सांभर (जयपुर) नोटः- नोह से प्राप्त लौंह अवशेष भारत मे लौंहयुग आरम्भ होने की सीमा रेखा निर्धारित करने के महत्वपूर्ण स्त्रोत है। चक 84, तखानवाला गंगानगर, अनुपगढ (बीकानेर)	स्लेटी रंग की चित्रित मृदभाण्ड संस्कृति का उदय । स्थलः- विराट नगर व जोधपुर (जयपुर) सुनारी नोह

Toppersnotes Unleash the topper in you

राजस्थान की प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ

बागौर

अवस्थिति – भीलवाडा (राजस्थान)
नदी – कोठारी (महासतियाँ का टीला नामक जगह पर ।)
उत्खनकर्ता – डॉ. वी. एन. मिश्र (1967–70) द्वारा डेक्कन कॉलेज पूना के सहयोग से एवं लैंश्विक महोदय

सामग्री:– प्रागैतिहासिक काल के साक्ष्य मिले है ।

- 4000 ईसा पूर्व - 5000 ईसा पूर्व पुरानी सभ्यता है ।
- यह सभ्यता तीन स्तर की है ।
  1. प्रथम स्तर– 4180-3285 ईसा पूर्व
  2. दूसरा स्तर– 2750 ईसा पूर्व -500 ईसा पूर्व
  3. तीसरा स्तर– 500 ईसा पूर्व – वर्तमान तक
- बडी संख्या मे लघु पाषाण उपकरण प्राप्त हुए है ।
- शिकार/आखेट द्वारा जीवन निर्वाह के साक्ष्य मिलते है ।
- यहां से ताँबे के उपकरण भी मिलते है, जिसमें प्रमुख उपकरण छेद वाली सुई है ।
- यहां से कृषि एवं पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले है ।
- यहां तीसरे स्तर की खुदाई मे लौह उपकरणों के साथ चाक पर बने बर्तन एवं मृदभाण्डों के साक्ष्य मिले है ।
- यहां मकान बाने के लिए पत्थर के साथ ईंटों का प्रयोग किया गया है ।
- बागौर के निवासी शवों को उत्तर दक्षिण दिशा मे दफनाते थे ।
- बागौर सभ्यता में शव को दफनाने की दिशा भिन्न थी । जैसे–
  1. प्रथम स्तर–पश्चिम–पूर्व (निवास पर ही)
  2. द्वितीय स्तर–पूर्व–पश्चिम (निवास पर, बर्तन व खाद्य पदार्थ व उपकरण के साथ)
- तीसरा स्तर–उत्तर–दक्षिण (निवास पे ही)
- बागौर को "मध्य पाषाण काल सभ्यता का घर" कहा जाता है ।
- बागौर सभ्यता स्थल को "आदिम सभ्यता/संस्कृति का संग्रहालय" कहा गया है ।

तिलवाडा

अवस्थिति:–बाडमेर
नदी– लूणी नदी
उत्खननन कर्ता – एन. मिश्रा, पूना विजय कुमार राजस्थान राज्य पुरातत्व एवं संग्रहालय तथा एल.सी. लैंसनिक (हिडनबर्ग विश्वविद्यालय) के नेतृत्व में किया गया ।

सामग्री

- यहां से 5 आवास स्थलों के साक्ष्य मिले है ।
- यह सभ्यता भी बागौर सभ्यता के समकालीन थी, अतः यहां से भी पशुपालन के साक्ष्य मिलते है ।
- यहां से एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव एवं पशुओं के अस्थि अवशेष मिले है ।
- यहाँ पर चॉक से बनी स्लेटी व लाल रंग के मृदभाण्ड, शिलबट्टा जली हुई हड्डियाँ, बर्तनों व सुक्ष्म उपकणों के अवषेश मिले है।
- वी.एन. मिश्र ने इस सभ्यता का काल 500 ईसा पूर्व – 200 ईसा पूर्व माना है ।
- पाषाणकालीन सभ्यता के अन्य स्थल निम्न है । जायल, डीडवाना (नागौर) बुढा पुष्कर (अजमेर) ।

कालीबंगा

अवस्थिति– हनुमानगढ
नदी–घग्घर/सरस्वती/दृषद्धती/चौतांग
उत्खननकर्ता– अमलानन्द घोष(1952) अन्य सहयोगी–बी. बी. लाल बी. के. थापर, जे. पी. जोशी एम. डी. खरे
शाब्दिक अर्थ– काली चुडिया (पंजाबी भाषा का शब्द)
उपनाम– दीन हीन बस्ती– कच्ची ईंटों के मकान ।

सामग्री

- सात अग्नि वेदिकाएँ एवं हवन कुण्ड मिले है, संभवत धार्मिक यज्ञानुष्ठान का प्रचलन रहा होगा ।
- युग्मित शवाधान प्राप्त हुए है संभवत सती प्रथा का प्रचलन रहा होगा ।
- एक मानव कपाल खण्ड मिला है, जिसे मस्तिष्क शो घन बीमारी तथा शल्य चिकित्सा की जानकारी मिलती है।
- जूते हुए खेत के साक्ष्य मिलते है (एकमात्र स्थान) एक साथ दो फसले, उगाया करते थे, जौ एवं सरसों । सडकें समकोण काटती है ।
- मकान कच्ची ईंटों के थे बल्लियो की छत होती थी । ऑक्सफोर्ट पद्धति/जाल पद्धति पर मकान बने है ।
- जल निकाली हेतु लकडी की नालियों के साक्ष्य मिले है अर्थात सुदृढ जल निकासी व्यवस्था नही थी ।
- ईंटों को धूप से पकाया जाता था ।

- वृताकार चबूतरे एवं बेलनाकार मुद्रे (मैसोपोटामिया) मिली है ।
- लाल रंग के मिट्टी के बर्तन मिले है जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खीची गई है ।
- यहां से एक खिलौना गाडी एवं पंख फैलाए बगुले की मूर्ति मिली है ।
- यहां से ऊँट के अस्थि अवशेष मिले है ।
- यहां का नगर अन्य हडप्पा स्थलों की तरह ही है, लेकिन यहां गढी एवं नगर दोनों दोहरे परकोटे युक्त है ।
- यहां उत्खनन में पांच स्तर प्राप्त हुए है प्रथम दो स्तर प्राक हडप्पा कालीन है । अन्य तीन स्तर समकालीन हडप्पा है ।
- यहां प्राचीनतम भूकम्प के साक्ष्य प्राप्त होते है ।
- इतिहासकार दशरथ शर्मा के अनुसार यह हडप्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी है ।
- यहां एक कब्रिस्तान मिला है जिसे यहां के लोगों की शवाधान पद्धति की जानकारी भी मिलती है ।
- अन्य सामग्रीः- मिट्टी के बर्तन, काँच के मनके, चुडियाँ, औजार, तौल के बाट आदिः
- यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों व मुहरों पर जो लिपी पाई गई। वो सिंधु लिपी के समान ही थी जिसे दायें से बायें लिखा जाता था।
- 1985-86 मे भारत सरकार ने यहाँ एक संग्रहालय बनवाया है ।
- सिन्धु घाटी सभ्यता के नगर नियोजन पर आधारित राजस्थान का आधुनिक नगर-जयपुर है ।

नोटः- कालीबंगा को सर्वप्रथम किसी ने देखा वह एल. पी. टेस्सी - टोरी थे, जिन्होने राजस्थान मे चारण साहित्य पर शोध किया था ।

सोथी

अवस्थिति- बीकानेर, हनुमानगढ 1953
उपनाम- कालीबंगा प्रथम भी कहा जाता है ।
ए. एन. घोष ने इसे सम्पूर्ण हडप्पा सभ्यता का उद्गम स्थल कहा है ।

नोटः- हडप्पा सभ्यता के अन्य स्थल- पुंगल एवं सोबनिया है ।

आहड

अवस्थिति - उदयपुर
नदी - आहड (आयड) या बेडच के किनारे
उपनामः- ताम्रवती नगरी (ताम्र उपकरणों के कारण)
बनासनीयन सभ्यता (बनास की सहायक नदियों पर स्थित)
धूलकोट-(स्थानीय नाम मिट्टी का टीला)
मृतकों का टीला-(मृतप्राय सभ्यता के कारण)
आघाटपुर-(प्राचीन नाम) आघाट दुर्ग
उत्खन्नकर्ताः- अक्षयकीर्ति व्यास सर्वप्रथम 1953 ई. में ।
सहयोगीः- रतनचन्द्र अग्रवाल, उत्खनन - 1954
एच.डी. सांक लिया, वी. एन. मिश्र, उत्खनन 1961-62

सामग्री

- यहां से 4000 ईसा पूर्व प्राचीन प्रस्तर युगीन सभ्यता के अवशेष मिले है ।
- इस सभ्यता का दूसरा नाम ताम्रवती नगरी भी मिलता है जो यहाँ ताँबे के औजारों व उपकरणों के अत्यधिक प्रयोग का सूचक है।
- यह 8 स्तर की सभ्यता है, जिसके चौथे स्तर से ताँबें की दो कुल्हाडियाँ मिली है ।
- यहाँ से एक घर मे 6-8 चूल्हे मिले है, सम्भवतः सामुहिक भोज अथवा संयुक्त परिवार का प्रचलन रहा होगा ।
- यहाँ से एक युनानी मुद्रा मिली है जिस पर अपोलो (सूर्य का देवता) का अंकन है ।
- बिना हत्थे के जलपात्र मिले है जो फारस (ईरान) से सम्बन्ध को दर्शाते है ।
- यहाँ के लोग पत्थरो की नीव एवं ईटों की दीवार बनाते थे, मकान पर छत बाँस का होता था ।
- ईटों को धूप से पकाया जाता था ।
- नालियों के अवशेष भी मिलते है ।
- यहां से काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड मिले है ।
- इन मृदभाण्डों मे लोग अनाज रखते थे जिन्हे स्थानीय भाषा में गोरे या कोठ कहा जाता है ।
- पशुपालन यहाँ की अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार था ।
- तौल के बाट व माप मिलना यहाँ वाणिज्य-व्यापार की उन्नति का संकेत करता है ।
- रंगाई-छपाई के व्यवसाय से परिचत थे ।
- यहां से एक बैल की मृण्मूर्ति मिली है जिसे "बनासीयन बुल" की संज्ञा दी गयी है ।
- यहां के लोग आभूषणों सहित शवों को दफनाते थे संभवतः मृत्यु के बाद भी जीवन मे विश्वास रखते थे ।
- आहड से ताँबा गलाने की भट्टियाँ प्राप्त हुई है ।
- यहां उत्खनन मे ठप्पे प्राप्त होने से रंगाई छपाई व्यवसाय के उन्नत होने का अनुमान लगाया जाता है ।

- उत्खनन में मिट्टी एवं पत्थर के मनके, आभूषणों तथा पशु-पक्षी आकृतियुक्त मिट्टी के खिलौने भी प्राप्त हुए हैं।
- अन्य सामग्री मे ताँबे की 6 मुद्राए, ताँबे की कुल्हाडियाँ अंगूठियाँ, चुडियाँ पत्थर के मनके, चटूरे इत्यादि प्राप्त हुए हैं ।

रंग महल

अवस्थितिः- हनुमानगढ
नदीः-घग्घर सरस्वती/चौताग/दृषद्वती
उत्खननः- श्रीमति हन्नारिड
(स्वीडिश)-1952-54
रंगमहलः-लाल रंग के पात्रों पर काले रंग की डिजायन की गई है अतः नाम रंगमहल पडा ।
इनका मुख्य भोजन चावल था ।

सामग्री

- यहाँ घण्टाकार मृदपात्र, टोटीदार घडे, कटोरे, बर्तनों के ढक्कन, दीपदान एवं बच्चो की खिलौनों की पहियेदार गाडियाँ इत्यादि मिली है ।
- यह स्थल कुषाणकालीन सभ्यता के समकालीन है । क्योंकि यहां से कुषाणकालीन सिक्के एवं मिट्टी की मुहरे मिली है ।
- मृण्यमूर्तियों पर गांधार शैली की छाप ।

बालाथल

अवस्थिति - वल्लभनगर उदयपुर)
नदी - आयड/बेडच के किनारे
उत्खननकर्ता - वी.एन.
मिश्र (1994-2000)
अन्य सहयोगी - वी. एस सिंह, आर. के. मोहनत देव

सामग्री

- यह एक ताम्रपाषाणिक सभ्यता है
- यहां के लोग मिट्टी के बर्तन एवं कपडा बुनना जानते थे ।
- यहां से एक दुर्गनुमा भवन एवं 11 कमरों वाला विशाल भवन भी मिला है ।
- यहां से मिट्टी का बना साँड की आकृति मिली है । यहां एक नलकूप एवं 5 लोहा गलाने की भट्टियों के साक्ष्य भी मिलते है ।
- उत्खनन से प्राप्त मृदभाण्डों, ताँबे के औजारों और मकानों पर सिंधु घाटी सभ्यता के समान है जिससे दोनों सभ्यता का सम्पर्क होने का पता चलता है।
- बुना हुआ वस्त्र मिला है ।

गिलूण्ड

अवस्थितिः- राजसमन्द
नदीः- बनास उत्खननकर्ताः-बी.बी. लाल (1957-58)
अन्य सह उत्खननकर्ताः- बी. एस., शिन्दे पूना, ब्रोगरी, फेशल, अमेरिका 1998-2008
उपनामः-बनास संस्कृति

सामग्री

- ताम्रयुगीन सैभ्यता है, जिसका समय 1900BC-1700BC निर्धारित किया गया है ।
- यहां से पांच प्रकार के मिट्टी के बर्तन मिले है । (1) सादे (2) काले (3) पालिशदार (4) भूरे (5) लाल एवं काल
- उत्खनन में मिट्टी के खिलौने (हाथी, ऊँट, कुत्ते की आकृति) पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दाँत की चूड़ियों के अवशेष मिले है।

ओझनिया

अवस्थिति - भीलवाडा
उत्खनन -भारतीय सर्वेक्षण विभाग (2000 ई.)

सामग्री

- यहां की भवन संरचना के आधार पर तीन स्तर की सभ्यता की जानकारी मिलती है ।
- सभी स्तरों पर काले एवं लाल रंग के मृदभाण्ड सफेद रंग से चिन्हित है तथा बनाने की विधि भी अलग है ।
- गाय एवं बैल की मृण्मूर्तियाँ, ताँबे की चुडियाँ, खिलौना, शंख, गाडी के पहिये, प्रस्तर हथौडा एवं कार्नेलियन फियास मिला है ।

गणेश्वर

अवस्थिति - नीम का थाना (सीकर) नदी- कॉतली
उत्खननकर्ता - R.C. अग्रवाल 1977

सामग्री

- यहां से 2800BC पूर्व की ताम्रयुगीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त होते है ।
- इतनी प्राचीन ताम्रयुगीन सभ्यता भारत मे दूसरी नही है अतः इसे ''ताम्रयुगीन सभ्यताओ की जननी'' कहा जाता है ।
- यहां से प्राप्त ताम्र उपकरणों मे 99 प्रतिशत तांबा है ।
- मकानों के लिए पत्थर का प्रयोग किया जाता था।

- बस्ती को बाढ से बचाने के लिए पत्थर के बांध बनाये गये ।
- भारत में पहली बार ताम्र उपकरण एक साथ यही प्राप्त हुए हैं ।
- यहां मिट्टी के बर्तन प्राप्त हुए हैं, जिन्हे कपीषवर्णी मृदपात्र कहा जाता है ।
- यह बर्तन काले एवं नीले रंग से सजाएं हुए हैं ।
- यहां से ताँबा का निर्यात हडप्पा सभ्यता व मोहनजोदडों को किया जाता था ।
- यहां से कुल्हाडी, तीर, भाले, सुईयाँ चुडियाँ एवं मछली पकडने का कांटा भी प्राप्त हुआ है ।

बैराठ

अवस्थिति–जयपुर
नदी– बाण गंगा/ताला नदी
उत्खननकर्ता–दयाराम साहनी(1936–37)
अन्य उत्खननकर्ताः–कैलाशनाथ दीक्षित एवं नीलरत्न बनर्जी
यह एक लौह युगीन सभ्यता है ।

अन्य विशेषताएँ एवं सामग्री

- बैराठ प्राचीन मत्स्य जनपद की राजधानी थी ।
- यहां बीजक की पहाडी, भीमजी की पहाडी (मोतीडुंगरी), महादेव जी की पहाडी उल्लेखनीय है, जहां से पुरातात्विक सामग्री प्राप्त होती है ।
- महाभारत काल मे पाडवों ने यहां अज्ञातवास काटा था ।
- यहां पर मौर्यकाल एवं बाद के काल के अवशेष मिलते है ।
- एक भांड में सूती वस्त्र से बंधी कुल 36 मुद्राएं मिली है, जिसमे से चाँदी की 8 मुद्राएं पंचमार्क (आहत) मुद्राए है । शेष 28 मुद्रांए इण्डो ग्रीक शासको की है ।
- बैराठ के उत्खनन से मिट्टी के बने पूजा पात्र, थालियाँ, मटके, कुंडिया, घडे प्राप्त हुए किन्तु लोहे व ताँबे की कलाकृति नही मिली ।
- 1999 मे उत्खनन मे यहां मौर्यकालीन गोल बौद्ध मन्दिर मठ, स्तूप के साक्ष्य मिले है जो हीनयान सम्प्रदाय से सम्बन्धित है ।
- यह भारत मे मन्दिर के प्राचीनतम अवशेष माने जा सकते है ।
- 1837 मे कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाडी से दो शिलालेख खोज निकाले ।
- यह शिलालेख अशोक के है तथा बाह्मी लिपि मे लिखे गए है इन्हे भाबू अभिलेख अथवा कलकता बैराठ अभिलेख के नाम से भी जाना जाता है ।
- इन अभिलेखों मे अशोक बौद्ध धर्म ग्रहण करने की जानकारी मिलती है ।
- बैराठ से एक स्वर्ण मंजूषा मिली है जिसमे संभवत बुद्ध के अस्थि अवशेष रहे होगें ।
- चीनी यात्री हैनसांग भी बैराठ आया था उसने यहां 8 बौद्ध मठो का जिक्र किया है ।
- हुण आक्रान्ता मिहिरकुल ने बैराठ का विध्वंस कर दिया था ।
  नोटः– जयपुर शासक रामसिंह ने भी यहां उत्खनन करवाया था उस समय बैराठ का किलेदार किरतसिंह खंगारोत था ।
- भीमसेन की डुंगरी पर एक गड्ढा है जिसमे पानी भरा रहता है । उसे भीमतला (भीमतालाब)भी कहा जाता है ।
  बैराठ से शंख लिपि एवं शैलाश्रय चित्र भी मिले है ।

ईसवाल

उदयपुर
उत्खननन– राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर

विशेषताएँ

- यह 5 स्तरों की सभ्यता है ।
- मकान पत्थरों के द्वारा निर्मित है जिन्हे मिट्टी के गारे से जोडा गया है ।
- यहां से 2000 वर्ष तक निरन्तर लोहा गलाने के साक्ष्य मिले है ।
- मौर्यकाल, शुंगकाल एवं कुषाण काल मे लोहा गलाने की गतिविधियां संचालित होती है ।

यह एक प्राक ऐतिहासिक सभ्यता है तथा यहां से प्राप्त सिक्कों को प्रारम्भिक कुषाणकालीन माना जाता है ।

नगर (टोंक) – प्राचीन नाम – मालव नगर/करकोटा नगर

- यहां पर 6000 मालव सिक्के प्राप्त हुए । एवं 1000 अन्य पात्रों के टुकडे मिले ।
- यहां पर लाला रंग के मृदपात्र मिले ।
- यहां के पात्रों पर मानव एवं पशुओं की आकृतियां मिली है ।
- यहां पर गुप्तोतर कालीन स्लेटी पत्थर से बनी महिषासुर मर्दिनी की प्रतिमा, पत्थर पर मोदक गणेश का अंकन एवं तीन फणधारी नागों का अंकन एवं कमल धारण किए हुए लक्ष्मी आदि उल्लेखनीय है ।
- इसे खेडा सभ्यता भी कहते है ।

गुनारी (झुंझुनू) – 1980–81

- कांतली नदी के तट पर झुंझुनू मे स्थित ।
- गुनारी गांव में लोहा गलाने की भट्टियों के अवशेष मिले ।
- ये भारत की प्राचीनतम लोहा गलाने की भट्टियां है ।
- भट्टियों मे धौंकनी लगाने की व्यवस्था तापक्रम का नियंत्रण करने हेतु थी ।
- यहां से लोहे के तीन तीर, कृष्ण परिणर्जित मृदापात्र मिट्टी तथा पत्थर के मनके, चूड़ियां तथा मृण मूर्तियां, मातृदेवी की मृण मूर्तियां मिली है जिन्हें कुषाणकालीन माना जाता है ।
- भोजन में चावल का प्रयोग करते थे तथा घोड़ों से रथ खींचते थे ।
- ऐसा माना जाता है कि यहां वैदिक आर्यो ने बस्ती बसाई थी ।
- इसके अलावा धान संग्रह का कोठा भी मिला है ।
- इसके अलावा मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष भी मिले है ।

नगरी सभ्यता – शिवि जनपद की राजधानी

- चित्तौड के पास स्थित नगरी को पाणिनी की अष्टाध्यायी में उल्लेखित मध्यामिका माना जात है ।
- 1872 में कालाईल ने इसकी खोज की ।
- 1920 में आर. डे. भंडाकर द्वारा एवं 1961 – 62 में केवी सौन्दर राजन द्वारा उत्खनन करवाया गया ।
- यहां से लेखयुक्त शिलाएं, महामूर्तियां, प्रतिमाएं, अलंकृत युक्त ईटें आदि मिले है ।
- यहां से गुप्तकालीन मंदिर के अवशेष मिले है, जिसमें शिव की मूर्ति प्रतिष्ठापित थी ।
- यहां चार चक्राकार कुंएँ गुप्तकालीन प्रकार के मिले है ।
- यहां ग्रीकों रोमन प्रभाव के शीर्ष, आहत एवं शिवि जनपद के सिक्के मिले है ।
- यह राजस्थान का सर्वप्रथम उत्खनित स्थल है ।
- दो शिलालेख मिले है घोसुण्डी, हाथी बाडा का शिलालेख

रैढ (टोंक) – ढील नदी के किनारे

- टोंक जिले की निवाई तहसील में स्थित ।
- 1938 में के. एन पुरी द्वारा उत्खनन करवाया गया ।
- मिट्टी के मकान, लौह उपकरण, पाषाण के मनके एवं अनाज के दाने प्राप्त हुए ।
- यहां से 115 घेरेदार कूप एवं 3000 आहत मुद्राएं मिली है ।
- जिनमें मालव तथा मित्र शासकों एवं अपोलोडोट्स तथा इण्डोग्रीसियन सिक्के प्राप्त हुए है ।
- सीसे की मोहर पर "मालव जनपदस" ब्राह्मी लिपि में अंकित है ।
- एक सेलखडी की डिबियां मिली है जो बौद्ध भिक्षुओं के अवशेष रखे जाने के समान है ।
- यहां से मिले अवशेष ईसा पूर्व तीसरी एवं ईसा की दूसरी शताब्दी के है जो मौर्यकालीन एवं शुंगकालीन मान जाते है ।
- लोहे के अत्यधिक भंडार मिलने के कारण इसे "प्राचीन राजस्थान/भारत का टाटानगर" भी कहा जाता है ।
- चाँदी के आहत मुद्राएं (पंचमार्क सिक्के) 3075
- बंदर के समान बर्तन
- आलीशान इमारतों के अवशेष ।

अन्य सभ्यता –

- भीनमाल की सभ्यता – जालौर
  (1) प्राचीन नाम – श्रीमाल
  (2) उत्खननकर्ता – रतनचन्द अग्रवाल (1953–54)
  (3) गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त का जन्म स्थान भी भीनमाल था ।
  (4) चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी भीनमाल की यात्रा की ।

महाजनपदकाल : (16)

महानजनपदकाल को भारत की द्वितीय नगरीय क्रान्ति कहा जाता है ।

1. मत्स्य महाजनपद

- जयपुर तथा अलवर (द.प. भाग) जिले का भाग ।
- इसका ऋग्वेद में भी उल्लेख मिलता है ।
- राजधानी : विराटनगर
  (विराटनगर का महाभारत में नाम मिलता है ।)
- "आर्य जन" के रूप में मत्स्य जाति का उल्लेख

2. कुरू महाजनपद

- अलवर का उत्तरी भाग
- राजधानी : इन्द्रप्रस्थ (वर्तमान में दिल्ली)

3. शूरसेन महाजनपद

- भरतपुर + अलवर का पूर्वी भाग + करौली + धौलपुर
- राजधानी : मथुरा
- श्री कृष्ण का सम्बन्ध

4. शिवि जनपदः प्राग्वाट/मेदपाट

- वर्तमान चित्तौडगढ जिला (मेवाड का भाग)
- राजधानी : माध्यमिका (नगरी)
- महाभारत तथा पतंजलि के महाभाष्य में माध्यमिका का नाम मिलता हैं।
- राजस्थान में सबसे पहले उत्खनन माध्यिका का हुआ। (1904)
- उत्खनन कर्ता : डी.आर. भण्डारकर

5. मालव जनपद

- वर्तमान टोंक व जयपुर जिला राजधानी : नगर
- सर्वाधिक सिक्के नगर मालव जनपद के प्राप्त होते हैं। ये सिक्के रैढ (टोंक) नामक स्थान से प्राप्त हुये हैं।
- ''प्राचीन भारत का टाटानगर''
- यहाँ का ''उत्खननकर्ता'': कैलाशनाथपुरी

6. यौद्धेय जनपद

- वर्तमान गंगानगर व हनुमानगढ जिला
- इस जनपद ने कुषाणों को भारत में आगे बढने से रोका था।
- गणतंत्रीय शासन व्यवस्था थी।

7. शाल्व जनपद : अलवर

- अलवर का उत्तरी भाग कुरू जनपद में हैं। अलवर का पूर्वी भाग शूरसेन जनपद में है।

8. अर्जुनायन जनपद

- अलवर व सीकर (नीम का थाना वाला क्षेत्र)

9. राजन्य जनपद

- भरतपुर

मौर्यकाल

- मौर्यकाल में सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र बैराठ (विराटनगर) था।
- 1837 में कैप्टन बर्ट को भाष्ठ शिलालेख मिला है जो वर्तमान में कलकत्ता संग्रहालय में सुरक्षित हैं। अन्य विवरण बैराठ सभ्यता नामक शीर्षक से पहले ही किया जा चुका हैं।
- इस समय बैराठ का किलेदार कीताजी खंगारो था।
- सवाई रामसिंह ने भी यहाँ खुदाई करवायी थी।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक कुमारपाल प्रबंध के अनुसार चित्रांग मौर्य ने चित्तौड के किले एवं वहां पर एक तालाब का निर्माण करवाया था।
- 718 के भाषासरीवर लेख (चितौड) के अनुसार यहां शाखा मौर्य का शासन था। इस अभिलेख में 4 शासकों के नाम प्राप्त होते है।
- कर्तज्ञ जेम्स होंड द्वारा संदर्भ में जाते समय यह अभिलेख गलती से समुद्र में गिर गया।
- 714 में बप्पा रावल ने मान मौर्य से चिर्ताड छीन लिया।
- 7 वे ही ई. के ''कंसुआ शिलालेख कोटा के अभिलेख'' ने मौर्य आज्ञा का चिन्ह मिलता है। इसके बाद राजस्थाान में मौर्यो का कोई चिन्ह नहीं मिलता हैं।
- बैराठ से सर्वाधिक शैलचित्र प्राप्त होते हैं।

नोट-

- गरदडा (बूंदी) में प्राचीन भारत के शैलचित्र (रॉक पेन्टिंग) मिलते हैं।

मौर्योत्तर काल

- यूनानी शासक मिनाडर ने 150 ई. में माध्यमिका (नगरी चितौड) पर अधिकार कर लिया था। इसकी पुष्टि पंतंजलि की महाभाष्य से होती है।
- बैराठ से मिनाडर की 16 यूनानी मुद्राऐं मिली हैं।
- लौह (भरतपुर) से शुंगकालीन 5 एम.. यक्ष की मूर्ति मिली हैं जिसे जाख बाबा की मूर्ति के नाम से जाना जाता हैं।
- हनुमानगढ के रंगमहल से कुपाषणकालीन मुद्राऐं प्राप्त हुई हैं।
- राजस्थान के नलियासर से कुषाण शासक हुविष्क की मुद्रा प्राप्त हुई हैं।
- इन विदेशी जातियों को नामों से यौद्धेय से मालव, अलुनियान, वाकाटक, मध्य आदि की सहायकता से खदेडा जा सका।
- नामों ने कुषाणों के विरूद्ध अपनी विजय के उपलब्ध में वाराणसी के 10 अश्वमेध यज्ञ किए वह स्थान आज भी दसासव मेघ घाट कहलाता है।

गुप्तकाल

- समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार इसने राजस्थान के गणतंत्रों को अपनी अधीनता करवायी।
- चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शक राजा सदू सिंह को हराकर शेष भागों में अपने अधिकार में कर लिया।
- राजस्थान में बयाना (भरतपुर) में सर्वाधिक स्वर्ण मुद्राऐं मिली हैं जिसके सर्वाधिक सिक्के चंद्रगुप्त द्वितीय के हैं।
- बडवा (बारां) गुप्तों को एक अभिलेख प्राप्त होता है। जिसमें मोखरी शासकों का वर्णन है।

- चारचौमा कोटा का शिव मंदिर गुप्तकालीन स्थापत्य कला का उदाहरण है ।
- 503 ई. में हूण शासक तोरमान ने गुप्तों से राज छीन लिया ।

उसके वंशज

- मिहिरकुल ने बाडोली में शिव मंदिर का निर्माण करवाया ।
- मालवा के शासक यशोवर्मन (यशोवर्मन) ने हूणों को हराकर राजस्थान में शांति स्थापित की ।
- हर्षवर्धन के समय राजस्थान 4 भागों में विभक्त था:- गुर्जर, बघारी, बैराठ, मथुरा

गुप्तोत्तर काल

- त्रिपक्षीय संघर्ष के दौरान राजस्थान (750-950 ई.)
- गुर्जर प्रतिहार यहां के शासक थे जिनकी राजधानी भीनमाल चीनी यात्री हेनसांग भीनमाल आया था । वह भीनमाल के "पी.लो-मो-लो." लिखता है ।
- ब्रह्मगुप्त जिन्हें भारत का न्यूटन कहा जाता है, भीनमाल के थे ।
- इन्होनें निम्न पुस्कों की रचना की । खंड खाद्यक एवं ब्रह्मस्फुट सिद्धांत
- कवि माघ भी भीनमाल के थे जिन्होने "शिशुपालवध नामक पुस्तक लिखी ।
- गुर्जर प्रतिहारों ने अरबों को सिंध से आगे बढने से रोका था ।

आधुनिक राजस्थान का इतिहास

1857 की क्रान्ति

- 1832 में राजस्थान में पहली बार A.G.G. (Agent to governer general) बना ।
- इसका 'मुख्यालय अजमेर' था ।
- "लॉकेट" राजस्थान का पहला ए.जी.जी था ।
- 1845 में आबू को मुख्यालय बनाया गया ।
- 1857 की क्रान्ति के समय "जॉर्ज पेट्रिक लॉरेन्ज" राजस्थान का ए.जी.जी था ।
- यह ए.जी.जी बनने से पहले मेवाड का पी.ए. **(political Agent)** था ।

1857 क्रान्ति के समय राजस्थान में अंग्रेजो की राजस्थान में 6 छावनी थी ।

1. नसीराबाद (अजमेर) भारत का अधिकारी जी.जी. Governe general
2. नीमच (एम.पी) राज्य का अधिकारी ए.जी.जी. (Assistant to G.G.)
3. देवली (टोंक) रियासत का अधिकारी (Political Agent)
4. एरिनपुरा (पाली)
5. ब्यावर (अजमेर)
6. खैरवाडा (उदयपुर)

"ब्यावर" व "खैरवाडा" सैनिक छावनियों में क्रांन्ति नहीं हुई थी ।

नसीराबाद

- "28 मई" को "15वी नेटिव इन्फेन्ट्री" पे क्रान्ति कर दी ।(पैदल सेना)
- 30वी नेटिव इन्फेन्ट्री भी इनके साथ जुड गई ।
- इन्होने के.पैनी, न्युबरी, स्पोटिसवुड नामक अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया तथा यहाँ से विद्रोही दिल्ली चले गये थे ।
- 18 जून 1857 को नसीराबाद के विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे व दिल्ली पर कब्जा किया ।

नीमच

- "मोहम्मद अली बेग" नामक सैनिक ने कर्नल एबोट के सामने वफादारी की प्रतिज्ञा करने से मना कर दिया था ।
  - 1857 की क्रान्ति में सर्वाधिक सैनिक अवध के थे।
- नीमच की छावनी एकमात्र छावनी थी जो राजस्थान से बाहर थी ।
- नीमज की क्रांति का दमन करने के लिए मेवाड पॉलिटिकल एजेन्ट (P.A.) सावर्स का साथ देने के लिए कोटा का P.A. बर्टन था ।
- "3 जून को" "हीरालाल व मोहम्मद अली नाम के सैनिक के नेतृत्व" में क्रान्ति हो गई ।
- नीमच छावनी से भागे 40 अंग्रेजो ने डूँगला गाँव (चित्तौड) में रूघाराम नामक किसान के पास शरण ली ।
- मेवाड का Political Agent (PA) "शॉवर्स" इन अंग्रेजो को उदयपुर पहुँचाता है जहाँ मेवाड के महाराणा "स्वरूप सिंह" ने इन्हें जगमन्दिर महलो में रखा था ।
- "शाहपुरा (भीलवाडा)" के राजा ने नीमच के विद्रोहीयों की मदद की थी ।
- निम्बाहेडा (तब टोंक, अभी चित्तौड) में विद्रोहियों का स्वागत किया गया । देवली छावनी के सैनिक भी इनसे आकर मिल गये तथा सारे विद्रोही दिल्ली चले गये ।

एरिनपुरा

- 1835 में "जोधपुर लीजियन" का गठन किया गया जिसका मुख्यालय एरिनपुरा था ।
- सीतल प्रसाद, मोती खाँ, तिलकराम आदि के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ ।
- शिवनाथ के नेतृत्व में "चलो दिल्ली मारो फिरंगी" का नारा दिया ।
- "पूर्विया सैनिको की टुकडी" (यू.पी से) ने 21 अगस्त को आबू में क्रान्ति कर दी । यहाँ से एरिनपुरा आकर अपने बाकी साथियों को लेकर दिल्ली की तरफ बढ गये ।
- "खैरवा" नामक गाँव में आउवा का सामन्त "कुशालसिंह चाम्पावत" इनसे मिला तथा इन्हे अपना नेतृत्व प्रदान किया ।

1. बिठौडा (पाली) का युद्ध 8 सितम्बर 1857

कुशलराज सिंघवी + हीथकोट **v/s** कुशाल सिंह चाम्पावत

कुशालसिंह जीत गया ।
इस युद्ध में जोधपुर का किलेदार ओनाड सिंह पंवार मारा गया था ।

2. चैलावास का युद्ध 18 सितम्बर 1857 (काले-गोरी का युद्ध)

जार्ज पैट्रिक लोरेन्स + मैकमोशन वर्सेज कुशालसिंह चम्पावत

जार्ज पैट्रिक लोरेन्स ↓ ए.जी.जी.

मैकमोशन ↓ पी.ए.

- इसे "काले-गोरी का युद्ध" कहा जाता है ।
इस युद्ध में भी कुशालसिंह जीत गया तथा "मैकमेशन" (जोधपुर का पॉलटिकल एजेन्ट)को मार दिया गया ।

1. आउवा का युद्ध 20 जनवरी 1858

- कर्नल होम्स तथा हंसराज जोशी ने आउवा पर आक्रमण किया । कुशालसिंह अपने छोटे भाई पृथ्वी सिंह (लाम्बिया गाँव का ठाकुर) को छोडकर मेवाड में सहायता के लिए चला गया ।
- होम्स ने आउवा पर अधिकार कर लिया तथा "सुगाली माता" की मूर्ति उठा कर ले गया ।
- इसे राजस्थान में क्रान्तिकारियों की देवी कहा जाता है ।
- मेवाड में सलूम्बर के "केसरीसिंह" तथा कोठारिया (राजसमन्द) के जोधसिंह ने कुशालसिंह को शरण दी ।
- 1860 में कुशालसिंह ने नीमच में अंग्रेजो के सामने आत्मसमर्पण कर दिया ।
- कुशालसिंह की जाँच के लिए अंग्रेजो ने "टेलर कमीशन" बनाया ।
- कुशालसिंह का साथ देने वाले अन्य सामन्तः

गुलर ⟶ बिशन सिंह

आलणियावास ⟶ अजीत सिंह

- आसोप (जोधपुर) - शिवनाथ सिंह

- शिवनाथ सिंह ने दिल्ली जाने का प्रयास किया था लेकिन नारनौल (हरियाणा) के पास गेरार्ड से (अंग्रेजी सेनापति) हार जाता है ।

सुगाली माता

यह 10 सिर, 54 हाथों वाली काले संगमरमर की मूर्ति है । जिसे अंग्रेजो (होम्स) ने अजमेर के "राजपूताना म्यूजियम" में रखा था । कालान्तर में पाली के "बांगड म्युजियम" में रख दिया गया ।

नोटः राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रोन्नति प्राधिकरण ने घोषणा (2014 में) की थी कि इस मूर्ति कों "आउवा गाँव" में स्थापित किया जायेगा ।

सुगाली माता को 1857 की क्रांति की कुल देवी कहते है ।

कोटा में जन विद्रोह

- 15 अक्टूबर 1857 को "लाला जयदयाल" व "मेहराब खाँ" के नेतृत्व में क्रान्ति हुई ।
- "राजा रामसिंह - द्वितीय" को नजरबंद कर दिया गया ।
- पी.ए बर्टन को मार दिया गया । (इसकी लाश पूरे कोटा में घुमाई)
- रामसिंह - द्वितीय से बर्टन की हत्या की जिम्मेदार वाले एक पत्र पर जबरदस्ती हस्ताक्षर करवायें ।
- करौली के "राजा मदनपाल" ने कोटा के राजा रामसिंह द्वितीय को मुक्त करवाया लेकिन अभी भी कोटा के प्रशासन पर विद्रोहियों का कब्जा था ।
- मार्च 1858 में "रॉबर्टस" (अंग्रेज अफसर) कोटा को विद्रोहियों से मुक्त करवाता है ।
- "जयदयाल" व "मेहराब खाँ" को मृत्युदण्ड दिया गया । रामसिंह - द्वितीय को तोपो की सलामी घटाकर 17 से 13 कर दी गई व मदनपाल की तोपों की सलामी की संख्या 13 के स्थान पर 17 कर दी । (अंग्रेज, बर्टन की हत्या को रोकने के प्रयास नहीं करने से नाराज)
- मथुराधीश मंदिर के महंत कन्हैयालाल गोस्वामी ने राजा व पिंडारियों के बीच समझौता करवाया ।

टोंक में विद्रोह

- नवाब वजीरूद्दौला अंग्रेजो का समर्थक था उसके मामा मीर आलम ने विद्रोहियों का साथ दिया ।
- निम्बाहेडा (टोंक में) ताराचन्द पटेल ने कर्नल जैक्सन की सेना का सामना किया था ।
- (क्योंकि कर्नल जैक्सन नीचम के विद्रोहियों का पीछा कर रहा था)
- टोंक के विद्रोह में "महिलाओं" ने भी भाग लिया था । इसकी पुष्टि मुहम्मद मुजीब के नाटक "आजमाईश" से होती है ।

धौलपुर में विद्रोह

- "राव रामचन्द्र" तथा "हीरालाल" के नेतृत्व में क्रान्ति हुई ।
- राजा भगवन्त सिंह ने क्रान्ति दबाने के लिए पटियाला से सेना बुलाई ।
- यहां ग्वालियर से आये हुए विद्रोहियों ने विद्रोह करवाया था ।

भरतपुर में विद्रोह

- यहाँ "गुर्जर" व "मेव जाति" ने अंग्रेजो के खिलाफ क्रान्ति कर दी ।
- राजा जसवन्त सिंह ने पी.ए. मौरीसन को भरतपुर छोडने की सलाह दी थी ।

अलवर में विद्रोह

- राजा बन्ने सिंह ने अंग्रेजो का साथ दिया तथा दीवान फैजल खाँ ने विद्रोहियों का साथ दिया

जयपुर में विद्रोह

विद्रोही :

- सादुल्ला खाँ
- उस्मान खाँ
- विलायत खाँ

पी.ए ईडन के कहने पर राजा रामसिंह द्वितीय ने विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया ।

अमरचंद बांठिया

- ये मूल रूप से बीकानेर के रहने वाले थे ।
- क्रान्ति के समय ग्वालियर में झाँसी की रानी की वित्तीय सहायता की थी ।
- इस कारण अंग्रेजो ने इसे फाँसी दे दी थी ।
- ये 1857 की क्रान्ति में "राजस्थान के सबसे कम उम्र के शहीद" थे ।
- इन्हें "1857 की क्रान्ति का भामाशाह" कहा जाता है ।

सरदार सिंह

- क्रान्ति के समय बीकानेर का राजा था ।
- एकमात्र राजा जो अंग्रेजो की सहायता के लिए रियासत से बाहर गया था ।
- हिसार के पास बाडलू नामक ग्राम में लडा ।
- अंग्रेजो ने इसे "टिब्बी परगने" (हनुमानगढ) के "41 गाँव" दिये थें ।

तांत्या टोपे

- तात्या टोपे राजस्थान में 2 बार सहायता लेने के लिए आया था ।
- यह सबसे पहले भीलवाडा के माँडलगढ में आया था ।
- बांदा का नवाब रहीम अली खान ने तात्या टोपे का साथ दिया ।
- बनास नदी के किनारे हुए "कुआडा के युद्ध" में राबर्टस से हार गया था ।
- झालावाड के राजा पृथ्वीसिंह ने पलायता नामक स्थान पर तांत्या टोपे के खिलाफ सेना भेजी । सेना की "गोपाल पलटन" को छोडकर बाकी सेना ने लडने से मना कर दिया । तांत्या टोपे झालावाड पर अधिकार कर लेता है । पृथ्वीसिंह को तांत्या टोपे को 5 लाख रूपयें देने पडे ।
- तांत्या टोपे ने बांसवाडा पर भी अधिकार कर लिया था । सलूम्बर के केसरी सिंह तथा कोठारियाँ के जोध सिंह ने तांत्या टोपे को सहायता दी थी ।
- बीकानेर के सरदार सिंह ने तांत्या टोपे को 10 घुडसवार की सहायता दी थी ।
- तात्यां टोपे "जैसलमेर को छोडकर" बाकी सभी रियासतो (राजस्थान की) में सहायता के लिए गया था ।
- सीकर के सामन्त को तांत्या टोपे की शरण देने के आरोप में फाँसी दी गई सीकर में तांत्या टोपे की छतरी हैं ।
- तांत्या के पुराने सहयोगी नरवर के मानसिंह था, मानसिंह ने विश्वासघात करते हुए 7 अप्रैल, 1859 को उसे अंग्रेजों को सुपुर्द कर दिया। अतः इसे अंग्रेजों द्वारा फाँसी दे दी गई ।

राजस्थान में किसान एवं जनजाति आन्दोलन

1. बिजौलिया किसान आन्दोलन : (गिरधारीपुरा से धाकड किसानों द्वारा शुरू) (1897)

- राणा सांगा ने अशोक परमार को "उपरमाल की जागीर" दी थी । जिसका मुख्यालय बिजौलिया था । यह मेवाड रियासत के 16 प्रथम श्रेणी ठिकानों में से एक था ।
- बिजौलिया का पुराना नाम - विजयावली
- उपरमाल का पुराना नाम - उतमादि
- उपरमाल नाम विन्ध्याचल के ऊँचे पठार पर बसा होने के कारण ।
- बिजौलिया वर्तमान भीलवाडा जिले में स्थित हैं ।

कारण :

- 84 प्रकार के टैक्स लगाना
- अधिक भू-राजस्व
- लाटा - कूंता व्यवस्था (अन्दाजे से फसल तौलना)
- चंवरी कर (कृष्ण सिंह ने लडकियों की शादी पर लगाया था ।)
- तलवार बंधाई (वैसे यह सामन्त द्वारा राजा को दिया जाता था ।)
- (1906 में बिजौलिया के पृथ्वीसिंह ने जनता पर लगाया था ।)
- यह आन्दोलन 3 चरणों में हुआ था ।

1. प्रथम चरण : 1897–1914 (17 साल)

''गिरधारीपुरा'' नामक गाँव से ''धाकड किसानों'' द्वारा आन्दोलन शुरू किया गया । ''साधुसीताराम दास'' के कहने पर नानजी पटेल व ठाकुरी पटेल, मेवाड महाराणा (फतेह सिंह) के पास मिलने के लिए गये तथा महाराणा ने हामिद नाम के अधिकारी को जाँच के लिए भेजा । प्रथम चरण में आन्दोलन में सफलता नही मिली तथा प्रारम्भ में ''स्वतः स्फूर्त ढंग'' से आन्दोलन चलता रहा स्थानीय नेता :

- प्रेमचन्द भील
- ब्रह्मदेव
- फतहकरण चारण

2. द्वितीय चरणः (1915–23) (9 साल)

- सन् 1916 में साधु सीताराम दास के कहने पर विजय सिंह पथिक ने बिजौलिया किसान आन्दोलन का नेतृत्व किया ।
- ''विजयसिंह पथिक'' व ''माणिक्य लाल वर्मा'' आन्दोलन के साथ जुडे विजयसिंह पथिक ने ''1917'' में ''ऊपरमाल मंच बोर्ड'' की स्थापना की तथा ''मन्ना पटेल'' को अध्यक्ष बनाया ।
- विजय सिंह का बचपन का नाम 'भूपसिंह' था ।
- मेवाड रियासत ने ''1919'' में ''बिन्दुलाल भट्टाचार्य आयोग'' की स्थापना की ।
- वर्ष 1919 में वर्धा में 'राजस्थान सेवा संघ' का गठन हुआ ।
- 1920 में राजस्थान सेवा संघ को अजमेर स्थानांतरण कर दिया ।
- ए.जी.जी. हॉलैण्ड व पी.ए. विलकिन्स के प्रयासो से किसानो के साथ समझौता हुआ तथा उनके 84 में से 35 कर माफ कर दिये गये ।
- बिजौलिया के सामन्त ने इस समझौते को मानने से मना कर दिया था ।
- विजयसिंह पथिक ने ऊपरमाल सेवा समिति गठित की व 'ऊपरमाल का डंका' नाम से पत्र प्रकाशित किया ।
- विजय सिंह पथिक ने कानपुर से प्रकाशित होने वाले अखबार 'प्रताप' (गणेश शंकर विद्यार्थी द्वारा) के सहयोग से इस आन्दोलन को पूरे देश में चर्चित कर दिया ।
- सन् 1920 में पथिक ने रामनारायण चौधरी के साथ मिलकर 'राजस्थान केसरी' नामक समाचार पत्र निकाला ।

3. तृतीय चरणः (1923–41) 18 साल

- किसानों ने विजयसिंह पथिक के कहने पर अपनी जमीनें सामन्त को लौटा दी । (तथा सामन्तो ने यह जमीन वापस किसानों को नही दी)
- 1927 में विजयसिंह पथिक आन्दोलन से अलग हो गये ।
- गाँधीजी ने जमनालाल बजाज को आन्दोलन के नेतृत्व के लिए भेजा । जमनालाल बजाज ने यहाँ ''हरिभाऊ उपाध्याय'' को आन्दोलन के लिए नियुक्त किया ।
- 1941 में मेवाड के प्रधानमंत्री ''वी. राघवाचारी'' तथा राजस्व मंत्री ''मोहन सिंह मेहता'' ने किसानों के साथ समझौता करवाया तथा किसानों की जब्त जमीने वापस दे दी गई व उनके ''कर'' कम कर दिये थे ।
- तिलक ने अपने 'मराठा' समाचार पत्र में प्रथम चरण बिजौलिया किसान आन्दोलन के पक्ष में लेख लिखा था तथा तिलक ने मेवाड महाराणा फतेहसिंह को पत्र भी लिखा ।
- विजयसिंह पथिक ने गणेश शंकर विद्यार्थी को चाँदी की राखी भेजी थी ।
- प्रेमचन्द का रंगभूमि उपन्यास बिजौलिया किसान आन्दोलन पर आधारित है ।
- माणिक्य लाल वर्मा 'पंछीडा' गीत के माध्यम से किसानों को उत्साहित करते थे ।
- भंवरलाल जी ने भी अपने गीतों से किसानों को उत्साहित किया था ।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन ने स्वयं को मेवाड से पृथक रखा था ।
- बिजौलिया किसान आन्दोलन में 'तुलसी भील' ने संदेश वाहक कार्य किया था ।

2. बेंगू किसान आन्दोलन

- बेंगू मेवाड रियासत का प्रथम श्रेणी ठिकाना था ।
- वर्तमान चित्तौडगढ जिले में स्थित है ।
- यहाँ पर भी धाकड किसानों द्वारा आन्दोलन किया गया ।
- 1921 में ''भेनाल (भीलवाडा)'' नामक स्थान से यह आन्दोलन शुरू हुआ ।

कारण :

1. अधिक भू-राजस्व
2. बेगार प्रथा

- बेंगू के सामन्त अनूपसिंह ने किसानों से समझौता कर लिया लेकिन मेवाड रियासत ने इसे मानने से मना कर दिया तथा इसे ''बोल्शेविक समझौता'' कहा । (ट्रेंच ने कहा)

- मेवाड रियासत ने ट्रेंच नामक अधिकारी को जाँच करने के लिए भेजा ।
- "13 जुलाई 1923" को गोविन्दपुरा में किसानों की एक सभा पर ट्रेंच ने फायरिंग कर दी । "रूपाजी व किरपाजी" नामक दो धाकड किसान शहीद हो गयें ।
- नेता : विजयसिंह पथिक रामनारायण चौधरी (राजस्थान सेवा संघ के मंत्री)
- बेंगू किसान आन्दोलन का नेतृत्व रामनारायण चौधरी ने किया था ।
- बेंगू किसान आन्दोलन में महिलाओं का नेतृत्व रामनारायण चौधरी की पत्नी अंजना चौधरी ने किया।
- 10 सितम्बर 1923 ई. को विजयसिंह पथिक को गिरफ्तार किया गया ।
- 1925 में लगान दरे निर्धारित की गई तथा 34 लागते (कर) समाप्त व बेगार पर रोक लगा दी ।

3. बूंदी किसान आन्दोलन (बरड किसान आन्दोलन) (1920)

- "अगस्त 1920" में साधु सीताराम दास ने "डाबी किसान पंचायत" की स्थापना की । "हरला भडक" को इसका अध्यक्ष बनाया गया । इस किसान आन्दोलन में "गुर्जर किसानों" की संख्या अधिक थी ।
- "2 अप्रैल 1923" में डाबी में किसानों की एक सभा पर पुलिस फायरिंग कर दी गई ।
- नानकजी भील झंडा गीत गाते हुए शहीद हो गये ।
- देवीलाल गुर्जर भी शहीद हुए ।
- अजमेर से प्रकाशित 'तरूण राजस्थान' व 'नवीन राजस्थान' वर्धा से राजस्थान केसरी और कानपुर से 'प्रताप' नामक समाचार पत्रो में सरकार द्वारा किसानों के दमनचक्र की नीति का विरोध किया गया।
- दूसरे चरण में यह आन्दोलन समाज सुधार की तरफ बढ गया था ।

प्रमुख नेता

1. पं. नयनूराम शर्मा
2. नारायण सिंह
3. भंवर लाल सुनार

- 1927 में राजस्थान सेवा संघ के बंद होने से आन्दोलन समाप्त हो गया ।
- बूंदी किसान आन्दोलन में सर्वाधिक महिलाओं ने भाग लिया था ।
- बूंदी में 1946 में एक बार पुनः किसान आंदोलन हुआ ।

नीमूचणा हत्याकांड (अलवर) (14 मई 1925)

- अधिक भू-राजस्व के विरोध में नीमूचणा में किसानो की एक सभा हो रही थी । जिस पर पुलिस ने फायरिंग कर दी तथा बहुत सारे किसान मारे गये ।
- गांधीजी ने यंग इंडिया समाचार पत्र में इस हत्याकांड को - "दोहरी डायरशाही" कहा था ।
- छाजू सिंह नामक पुलिस अधिकारी ने फायरिंग की जिसमें 156 लोग शहीद हुए । (14 मई 1925)
- "रियासत समाचार पत्र" ने इसे "जलियाँवाला काण्ड से भी अधिक भयानक" बताया ।
- "तरूण राजस्थान" समाचार पत्र ने इस घटना को सचित्र प्रकाशित किया था ।
- इस आन्दोलन के अततः किसानों की मांगे मान ली गई ।
- महात्मा गाँधी ने नीमूचाणा में हुए हत्याकाण्ड को जलियांवाला बाग हत्याकांड से भी विभत्स बताया ।
- एकमात्र आन्दोलन जो खालसा में चला ।

शेखावाटी किसान आन्दोलन

- 1922 में सीकर के सामन्त कल्याणसिंह ने करों मे वृद्धि कर दी ।
- राजस्थान सेवा संघ के मंत्री रामनाराण चौधरी के नेतृत्व में आन्दोलन चलाया गया ।
- लंदन के समाचार पत्र डेली हेराल्ड में आन्दोलन की खबरे छपती थी ।
- 1925 में पैथिक लोरिन्स ने ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में आन्दोलन की बात की ।
- 1931 में जाट क्षेत्रीय महासभा का गठन किया गया ।
- महासभा का प्रथम अधिवेशन (1933) - पलथाना (सीकर)
- 20 जनवरी 1934 को बसंत पंचमी के दिन ठाकुर देशराज ने जाट प्रजापति महायज्ञ का आयोजन करवाया ।
- मुख्य पुरोहित (खेमराज शर्मा)
- मुख्य यज्ञपति - कुंवर हुकुमसिंह

कटराथल (सीकर) सम्मेलन (25 अप्रैल 1934)

10000 से अधिक महिलाओं का सम्मेलन था ।
कारण - सीहोट के सामन्त ने महिलाओं से दुर्व्यवहार किया था ।
अध्यक्ष - किशोरी देवी
मुख्य वक्ता - उत्तमा देवी

कूदन गांव (सीकर) हत्याकाण्ड (25 अप्रैल 1935)

धापी देवी के उत्साहित करने पर किसानों ने टैक्स देने से मना कर दिया केप्टन वेब ने वहाँ पर फायरिंग कर दी जिसमें 4 किसान शहीद हो गये ।

- चेतराम
- टीकूराम
- तुलछाराम
- आशाराम

इस हत्याकाण्ड की चर्चा ब्रिटेन के हाउस ऑफ कॉमन्स में हुई थी ।

15 मार्च, 1935 को किसानों से समझौता हुआ, लगान को 3 महीने में चुकाने के लिए 25 से 30% की छूट दे दी गई ।

डायसिंहपुरा (झुंझुनु) हत्याकाण्ड (21 जून 1934)

यह प्रथम हत्याकाण्ड था जिसमें किसानों के हत्यारों को सजा मिली ।

राज्य की सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाएँ

संस्था का नाम	स्थापना	स्थान	संस्थापक
देश हितैषणी सभा	1877	उदयपुर	अध्यक्ष-महाराणा सज्जनसिंह
परोपकारी सभा	1883	उदयपुर	अध्यक्ष महाराणा सज्जनसिंह
राजपुत्र हितकारिणी सभा	1888	अजमेर	ए.जी.जी. कर्नल वाल्टर
सर्वहितकारिणी सभा	1907	चूरू	स्वामी गोपालदास
मित्र-मण्डल	-	बिजौलिया	साधु सीताराम दास
वीर भारत सभा	1910	-	केसरीसिंह बारहठ
विद्या प्रचारिणी सभा	-	बिजौलिया	साधु सीताराम दास
प्रताप सभा	1915	उदयपुर	-
हिन्दी साहित्य समिति	1912	भरतपुर	जगन्नाथ दास
प्रजा प्रतिनिधि सभा	1918	कोटा	पं. नयनूराम शर्मा
मरूधर मित्र हितकारिणी सभा	1918	जोधपुर	चाँदमल सुराणा
राजपूताना मध्य भारत सभा	1918	दिल्ली	अध्यक्ष-जमनालाल बजाज
राजस्थान सेवा संघ	1919	वर्धा	विजयसिंह पथिक
मारवाड सेवा संघ	1920	जोधपुर	जयनारायण व्यास, अध्यक्ष-दुर्गाशंकर
अमर सेवा समिति	1922	चिडावा	मा. प्यारेलाल गुप्ता
मारवाड हितकारिणी सभा	1923	जोधपुर	जयनारायण व्यास
चरखा संघ	1927	जयपुर	जमनालाल बजाज
राजपूताना देशर राज्य परिषद्	1928	अजमेर	विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी
जीवन कुटीर	1929	वनस्थली	हीरालाल शास्त्री
मारवाड यूथ लीग	1931	जोधपुर	जयनारायण व्यास
राजस्थान हरिजन सेवा संघ	1932	अजमेर	अध्यक्ष - हरविलास शारदा
खांडलाई आश्रम	1934	डूँगरपुर	माणिक्य लाल वर्मा
नागरी प्रचारिणी सभा	1934	धौलपुर	ज्वाला प्रसाद, जिज्ञासु, जौहरीलाल इंदु
महिमा मण्डल	1935	उदयपुर	दयाशंकर श्रोत्रिय
मारवाड लोक परिषद्	1938	-	अध्यक्ष - रणछोडदास गट्टानी
आजाद मोर्चा	1942	जयपुर	बाबा हरिश्चन्द्र